हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास

बी०ए० प्रथम हिन्दी भाषा

एवं

बी०ए० तृतीय हिन्दी साहित्य

हेतु

अत्यन्त महत्वपूर्ण

प्रस्तुतकर्ता

डॉ. जगदीश शरण

सहायक प्रोफ़ेसर हिन्दी

राजकीय महाविद्यालय, भोजपुर

(मुरादाबाद)

स्वयं निर्मित

Scanned with CamScanner

हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास : भाषा के अर्थ में 'हिन्दी' शब्द फारस के निवासियों द्वारा प्रदत्त है। सिन्धु, सिन्ध और सिंधी शब्दों के फ़ारसी रूप हिंदु, हिंद और हिंदी हैं। संस्कृत का 'स' फ़ारसी में 'ह' हो जाता है। अब-फारस के मुसलमान भारत के मुसलमानों को हिंदी कहते थे — "बादशाह ने हिन्दुओं को तो हाथी से कुचलवा डाला, किन्तु मुसलमान, जो हिंदी थे, सुरक्षित रहे।" अतः हिन्दी शब्द फारसियों की देन है। 'हिंदी' शब्दार्थ की दृष्टि से हिंद या भारत में बोली जाने वाली भाषा है। इसके प्राचीन नाम हिंदुई या हिंदवी मिलते हैं। जब मुसलमान भारत आए तो उन्होंने मध्यदेश की भाषा को 'हिंदुई' कहा जो बाद में 'व' श्रुति के साथ 'हिंदुवी' भी बन गई। मोटे तौर पर दिल्ली के आसपास की बोली देहलवी या उसके निकटवर्ती क्षेत्र की बोलियों पर आधारित यह हिन्दू और मुसलमानों की समान भाषा रही। हिंदी के अन्तर्गत इसके सभी प्राचीन एवं नवीन रूप — हिंदी, हिन्दुस्तानी, दक्खिनी, रेख्ता, उर्दू आदि सभी समाहित हो जाते हैं। अमीर खुसरो के समय तक 'हिंदी' शब्द स्थानवाची था, भाषावाची नहीं। बाद में यह भाषावाची बन गया। अमीर खुसरो ने लिखा है —

तुर्क-ए-हिंदुस्तानिम मनदर हिंदवी गोयम जवाब।
शक्कर-ए-मिस्री न दारम कज अरब गोयम सुखन॥

[मैं हिन्दुस्तानी तुर्क हूँ और हिंदवी में उत्तर देता हूँ। मेरे पास मिस्री की शक्कर नहीं है, जिससे मैं अरबी में बात कर सकूँ।]

डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया के अनुसार तत्कालीन परिस्थितियों में यही भाषा-स्वरूप मान्य था, तभी तो दूर-दूर तक के व्यक्ति भी इसको सहर्ष स्वीकार करते थे। यहाँ तक कि तत्कालीन कश्मीर के इतिहास में भी एक स्थान पर 'हिंदवी' का प्रयोग मिलता है। इसी भाषा का रूप कालांतर में बदलता हुआ 'हिन्दी' बना जिसका प्रयोग — ठेठ हिंदी, खड़ीबोली हिंदी, शुद्ध हिंदी, उच्च हिंदी, नागरी हिंदी, मानक हिंदी आदि कई रूपों अथवा नामों से होता है।

Scanned with CamScanner

29

भाषा के विभिन्न रूप :- भाषा के विभिन्न रूपों के आधार ये हैं — इतिहास, भूगोल, उपयोग या व्यवहार, साधुता - असाधुता, प्रचलन, निर्मिति। इन आधारों पर भाषा के विभिन्न रूप ये हैं — मूल भाषा (उदाहरणार्थ, मूल भारोपीय भाषा > भारोपीय भाषाएँ > हिन्द-ईरानी भाषाएँ > वैदिक > संस्कृत > पालि > प्राकृत > अपभ्रंश > और आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ), भाषा, बोली, विभाषा, उपभाषा, प्रान्तीय भाषा, उपबोली, परिनिष्ठित भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, अन्तर्राष्ट्रीय भाषा, कृत्रिम भाषा, साहित्यिक भाषा।

हिन्दी भाषा की बोलियाँ

डॉ० धीरेन्द्र वर्मा ने हिन्दी की बोलियों का प्रवृत्तिगत विभाजन इस प्रकार किया है —

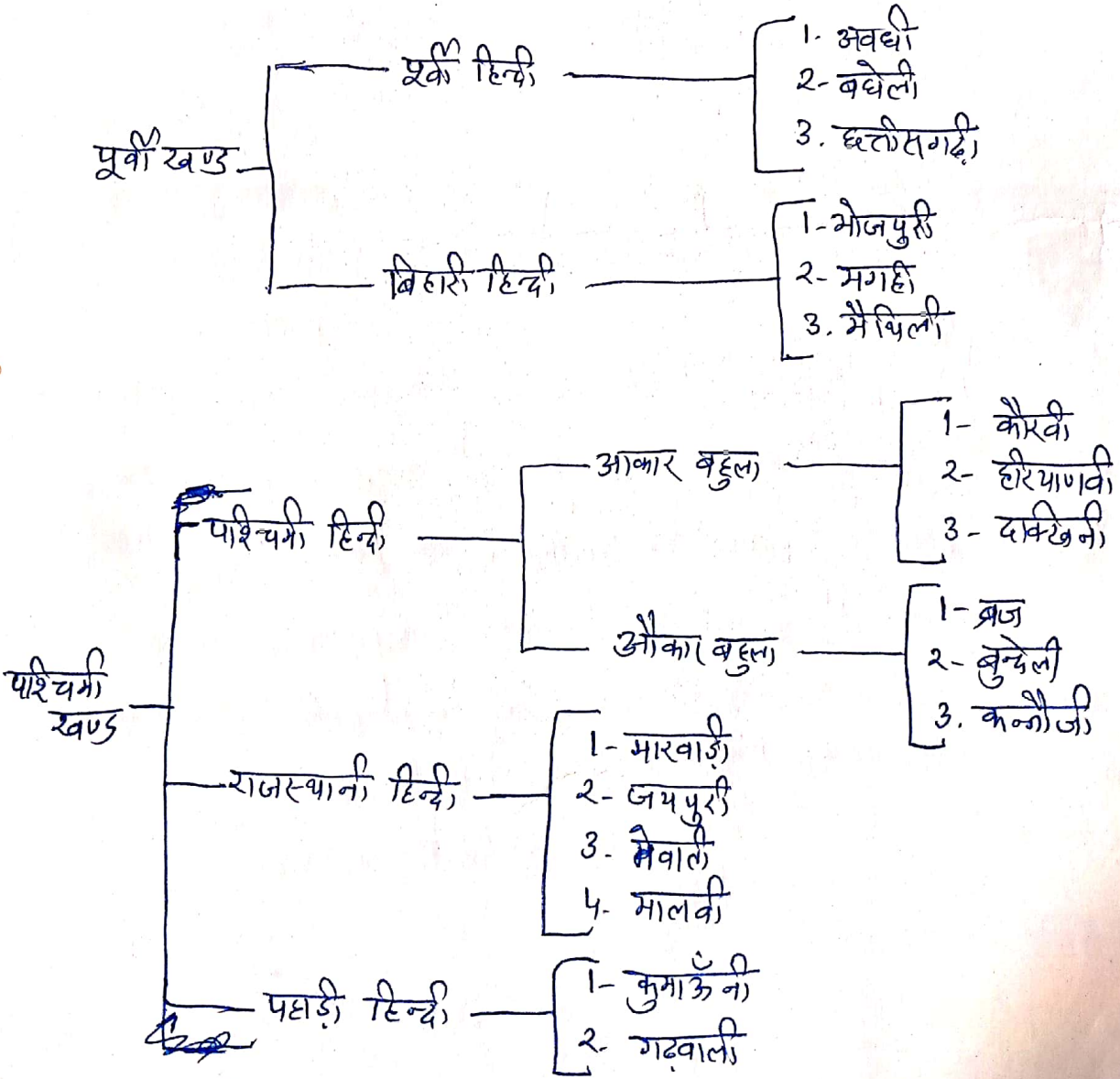

Scanned with CamScanner

इनके अतिरिक्त निमाड़ी, पश्चिमी पहाड़ी, पूर्वी पहाड़ी (नेपाली), मेवाड़ी, ढूँढाड़ी, हाड़ौती, अहीरवाटी आदि और भी हिन्दी की बोलियाँ हैं। भोलानाथ तिवारी ने ताजुज्बकी को भी इनमें शामिल कर लिया है।

डॉ० अनुज प्रताप सिंह ने हिन्दी की बोलियों को चुकी इस प्रकार दी है –

1. पूर्वी हिन्दी – अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी।
2. पश्चिमी हिन्दी – ब्रज, बाँगरू या जाटू, खड़ी बोली, कन्नौजी, बुन्देली।
3. राजस्थानी – मारवाड़ी, जयपुरी, मेवाती (पश्चिमी हिन्दी से सम्बद्ध)
4. बिहारी – भोजपुरी, मगही, मैथिली (पूर्वी हिन्दी से सम्बद्ध)
5. पहाड़ी – नेपाली, कुमाऊँनी, गढ़वाली, जौनसारी आदि (पश्चिमी हिन्दी से सम्बद्ध)

सम्प्रति, हिन्दी की प्रमुख बोलियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

1. **अवधी :**

क्षेत्र : लखनऊ, फैजाबाद, सीतापुर, उन्नाव, रायबरेली, खीरी, गोण्डा, बहराइच, सुल्तानपुर, बाराबंकी, प्रतापगढ़, कानपुर, इलाहाबाद, फतेहपुर, मिर्जापुर, सोनभद्र तथा जौनपुर का कुछ हिस्सा।

अन्य नाम : मिर्जापुरी, बनोधी, वैसवाड़ी, कोसली।

बोलने वालों की संख्या : 42 लाख (डॉ० धीरेन्द्र वर्मा)

महत्त्व : रामचरितमानस, पद्मावत जैसे महाकाव्य इसी भाषा में लिखे गए।

2. **बघेली :** उद्भव – अर्धमागधी अपभ्रंश का एक रूप।

क्षेत्र : केन्द्र रीवाँ। बघेल राजपूतों की बस्ती अधिक होने से बघेली नाम पड़ा। रीवाँ, नागोद, शहडोल, सतना, मैहर तथा मध्यप्रदेश के दमोह, जबलपुर, मण्डला तथा बालाघाट जिले।

उपबोलियाँ : तिरहारी, जुड़ार, गहोरा, मरारी, कुंभारी, गोंडवानी, केवटी, बुन्देली, बनाफरी-बघेली, पोंवारी।

Scanned with CamScanner

3. छत्तीसगढ़ी : उद्भव – अर्द्धमागधी अपभ्रंश का दक्षिणी रूप।

क्षेत्र : केन्द्र छत्तीसगढ़। रायपुर, बिलासपुर, कांकेर, नन्दगाँव, रायगढ़, खैरागढ़, कोरिया, सरगुजा। उदयपुर और जयपुर का कुछ हिस्सा।

उपबोलियाँ : सरगुजिया, सदरी कोरवा, बैगानी, बिंझवाली, कलंगा, भुलिया।

अन्य नाम : लरिया, खल्टाही, खलताही ?, कांकेरी, बिलासपुरी, लरिया, खल्टाही।

महत्व : लोक साहित्य की रचना।

4. ब्रज : उद्भव – शौरसेनी अपभ्रंश का मध्यवर्ती रूप।

क्षेत्र : मथुरा, आगरा, अलीगढ़, धौलपुर, मैनपुरी, एटा, बदायूँ, बरेली, हरदोई, कानपुर, बुलन्दशहर, भरतपुर, ग्वालियर।

उपबोलियाँ : भुक्सा, अन्तर्वेदी, भरतपुरी, डांगी, माथुरी।

अन्य नाम : गँवारी, धौलपुरी, भरतपुरी, जादोबाटी, सिकरवाड़ी, कठेरिया, डँगी।

महत्व : उत्कृष्ट ब्रज-साहित्य की रचना।

5. बाँगरू : उद्भव – शौरसेनी अपभ्रंश का पश्चिमी रूप।

क्षेत्र : दिल्ली, रोहतक, करनाल, हिसार, पटियाला, नाभा, जींद, पानीपत, कुरुक्षेत्र।

उपबोलियाँ : हरियानी, जाटू, चमरवा, बाँगड़ी, कौरवी।

अन्य नाम : जाटू।

महत्व : लोकसाहित्य की रचना।

विशेष : बाँगर प्रदेश (एक प्रकार की ऊँची भूमि) की होने से यह बाँगरू ~~[illegible]~~ कही जाती है।

Scanned with CamScanner

6. **कन्नौजी** : उद्‌भव – शौरसेनी अपभ्रंश।

क्षेत्र : केन्द्र – फर्रुखाबाद। शाहजहाँपुर, पीलीभीत, इटावा, कानपुर, हरदोई का कुछ भाग। ब्रज और अवधी के बीच का क्षेत्र। ब्रजभाषा के काफी नजदीक।

महत्व : लोकसाहित्य की रचना।

7. **बुन्देली** : उद्‌भव – शौरसेनी अपभ्रंश।

क्षेत्र : झाँसी, जालौन, हमीरपुर, ग्वालियर, भोपाल, ओरछा, सागर, नृसिंहपुर, सिवनी, होशंगाबाद, दतिया, पन्ना, छिंदवाड़ा, चरखारी, बालाघाट, नागपुर। ब्रज का दक्षिणी भाग।

उपबोलियाँ : पँवारी, लोधाँती, खटोला, राठौरी, बनाफरी, निभट्टा, लोधी, भदावरी, कुम्हारी, कोष्ठी आदि।

महत्त्व : लोककाव्य आल्ह-खण्ड की रचना।

8. **पंजाबी** : केन्द्र अमृतसर।

क्षेत्र : पंजाब प्रदेश।

उपभाषा – डोगरी (जम्मू और काँगड़ा जनपद में बोली जाने वाली बोली)

9. **हरियाणवी** : उद्‌भव – शौरसेनी अपभ्रंश का पश्चिमी रूप।

क्षेत्र : हरियाणा। पंजाब का कुछ भाग तथा दिल्ली का देहाती इलाका।

विकास – शौरसेनी अपभ्रंश के पश्चिमी रूप से।

मुख्य बोलियाँ : जाटू, बाँगरू।

महत्त्व : लोकसाहित्य की रचना।

Scanned with CamScanner

10. **वैसवाड़ी :**

क्षेत्र : उन्नाव, रायबरेली।

विशेष : 'बैस' राजपूतों के प्राधान्य के कारण इस प्रदेश को बैसवाड़ा कहते हैं। बैसवाड़ा क्षेत्र में उन्नाव और रायबरेली के बीच के बछरावाँ, डलमऊ, सिरैं, सलोनी, मोरावाँ, पुरवा, पनहन, पाटन, मगरायर, घाटमपुर, भगवन्तपुर, बिहार और डौंडिया-खेरा आदि परगने आते हैं।

अन्य नाम : वैसवाड़ी अवधी।

11 **राजस्थानी :** डॉ० जार्ज ग्रियर्सन ने इसके पाँच वर्ग किये हैं — पश्चिमी, उत्तर-पूर्वी, मध्य-पूर्वी, दक्षिण-पूर्वी, दक्षिणी राजस्थानी) भोलानाथ तिवारी ने इसके केवल चार वर्ग किए हैं — पश्चिमी, उत्तरी, पूर्वी, दक्षिणी राजस्थानी।

(क) **पश्चिमी राजस्थानी :** इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश के उपनागर रूप से हुआ।

क्षेत्र : जोधपुर, अजमेर, मेवाड़, सिरोही, जैसलमेर, बीकानेर।

उपबोलियाँ : मारवाड़ी, ढूँढाड़ी, सिरोही।

अन्य नाम : मारवाड़ी।

महत्त्व : उत्कृष्ट साहित्य की रचना। मीराबाई के पद इसी भाषा में रचित।

(ख) **उत्तरी राजस्थानी :** उद्भव — शौरसेनी अपभ्रंश का उपनागर रूप।

क्षेत्र : अलवर, गुड़गाँव, भरतपुर आदि। इसकी एक मिश्रित उपबोली अहीरवाटी है जो दिल्ली, गुड़गाँव तथा करनाल के पश्चिमी इलाकों में बोली जाती है।

उपबोलियाँ : राठी, कठेर, गुजरी, नहेर।

अन्य नाम : मेवाती।

महत्त्व : लोकसाहित्य की रचना।

(ग) पूर्वी राजस्थानी : उद्भव – शौरसेनी अपभ्रंश का उपनागर रूप।

क्षेत्र : जयपुर, अजमेर, किशनगढ़।

उपबोलियाँ : तोरावटी, चौरासी, काठेड़ा। प्रतिनिधि बोली – जयपुरी।

महत्त्व : लोकसाहित्य की रचना।

(घ) दक्षिणी राजस्थानी : उद्भव – शौरसेनी अपभ्रंश का उपनागर रूप।

क्षेत्र : इन्दौर, उज्जैन, रतलाम, देवास, भोपाल, होशंगाबाद।

उपबोलियाँ : रँगड़ी, पाटवी, सोंडवाड़ी, रतलामी। प्रतिनिधि बोली – मालवी।

महत्त्व : लोकसाहित्य की रचना।

12 पहाड़ी : उद्भव : शौरसेनी अपभ्रंश।

क्षेत्र : हिमाचल प्रदेश में भद्रवाह के उत्तर-पश्चिम से लेकर नेपाल का पूर्वी भाग।

उपबोलियाँ : नेपाली, कुमाऊँनी।

महत्त्व – साहित्य-रचना।

13. कुमाऊँनी :

क्षेत्र : कुमाऊँ मण्डल। नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, चमोली, उत्तरकाशी।

उपबोलियाँ : कुमयाँ या कुमैयाँ, खस पराजिया, फल्दकोटिया, पछाई, गंगोला, सीराली, दानपुरिया, अस्कोटी, चौगरखिया, भोटिया, जोहारी, रउचोभैंसी आदि।

विशेष : कुमाऊँनी पर राजस्थानी का पूरा प्रभाव।

महत्त्व : उत्कृष्ट साहित्य-सृजन। कृष्णदत्त पाण्डे, गुमानी पन्त, गिरदा आदि प्रसिद्ध लेखक।

14. गढ़वाली

क्षेत्र : गढ़वाल तथा उसके आसपास टिहरी, अल्मोड़ा, देहरादून, सहारनपुर, बिजनौर और मुरादाबाद का उत्तरी भाग।

उपबोलियाँ : श्रीनगरिया, राठी, बधाणी, सलाणी, दसौल्या आदि।

महत्व : लोकसाहित्य का सृजन।

15. बिहारी : उद्भव - पश्चिमी मागधी अपभ्रंश।

क्षेत्र : पूरा बिहार और उत्तर प्रदेश के बलिया, गाजीपुर, पूर्वी फैजाबाद, पूर्वी जौनपुर, आजमगढ़, बनारस, देवरिया, गोरखपुर आदि जिले।

प्रमुख बोलियाँ : मैथिली, मगही, भोजपुरी। तीनों का एक वर्ग बनाकर उन्हें 'बिहारी' नाम प्रदान करने का श्रेय ग्रियर्सन को है।

विशेष : केवल मैथिली में ही साहित्य-सृजन।

16. भोजपुरी : उद्भव - पश्चिमी मागधी या मागधी अपभ्रंश का पश्चिमी रूप।

क्षेत्र : उत्तर में नेपाल की दक्षिणी सीमा रेखा के आसपास से लेकर दक्षिण में छोटा नागपुर तक और पश्चिम में पूर्वी मिर्जापुर, बनारस तथा फैजाबाद, राँची, पटना, बस्ती, गाजीपुर, बलिया, शाहाबाद, पलामू आदि तक।

अन्य नाम : पूरबी बोली।

नामकरण : 'भोजपुरी' नाम बिहार के जिला शाहाबाद के भोजपुर नामक एक परगना के एक छोटे से कस्बे के आधार पर पड़ा।

महत्व : साहित्य-सृजन।

17. मगही :

क्षेत्र : गया, पटना, हजारीबाग, मुंगेर, पलामू, भागलपुर, राँची आदि जिले।

अन्य नाम : 'मगही' शब्द मागधी का विकसित रूप है। इसलिए इसे मागधी भी कहा जाता है। इसका परिनिष्ठित रूप गया में बोला जाता है।

महत्त्व : लोकसाहित्य की रचना। 'गोपीचन्द' और 'लोरिक' नामक ग्रन्थ इस बोली ~~[illegible]~~ में रचित हैं।

18. मैथिली :

क्षेत्र : बिहार के उत्तरी भाग में अर्थात् चम्पारन, मुजफ्फरपुर, मुंगेर, भागलपुर, दरभंगा, पूर्णिया तथा उत्तरी संथाल। इसके अतिरिक्त मालदह, दिनाजपुर और तिरहुत राज डिवीजन की सीमा से सटा नेपाल का तराई इलाका।

उपबोलियाँ : छिकाछिकी, जोलहा।

महत्त्व : प्रसिद्ध शृंगारी कवि विद्यापति इसी भाषा के कवि। अन्य कवि उमापति, नन्दीपति, रमापति, महीपति आदि। विद्यापति को 'मैथिल कोकिल' के नाम से जाना जाता है।

19. दक्खिनी : ~~क्षेत्र~~

क्षेत्र : दक्षिण भारत में बीजापुर, गोलकुण्डा, अहमदनगर, बरार, बम्बई तथा मद्रास प्रदेश।

अन्य नाम : हिन्दी, हिन्दवी, दकनी, दखनी, देहलवी, गूजरी, हिन्दुस्तानी, जबाने हिन्दुस्तान, मुसलमानी आदि।

महत्त्व : खड़ी बोली गद्य का प्राचीनतम प्रामाणिक ग्रन्थ 'मिराजुल आशिकीन' (लेखक, ख़्वाजा बन्दानवाज़) इसी भाषा में ~~[illegible]~~ मिलता है। प्रमुख लेखक – अब्दुल्ला, वजही, निजामी, गवासी, गुलाम अली, नेहुरी।

उपबोलियाँ : मैसूरी, गुलबर्गी, बीदरी, बीजापुरी, हैदराबादी आदि।

विशेष : उर्दू साहित्य का आरम्भ दक्खिनी से। उर्दू का प्रथम कवि 'वली' ही दक्खिनी का अन्तिम कवि वली औरंगाबादी। (डॉ० भोलानाथ तिवारी)

Scanned with CamScanner

20. डिंगल :, इसे 'भाटभाषा' भी कहा गया है। 'डिंगल' का अर्थ अनेक विद्वानों ने इस प्रकार किया है —

डॉ० श्यामसुन्दर दास : पिंगल के आधार पर ही गढ़ा हुआ शब्द
डॉ० टेस्सीटरी : अनियमित या गँवारू
हरप्रसाद शास्त्री : डगर
पुरुषोत्तम स्वामी : डिम+गल से डिंगल बना है। डमरू की ध्वनि या रणचण्डी की ध्वनि। 'डी' धातु का अर्थ है 'उड़ना'। ऊँचे स्वर से पढ़े जाने से डिंगल उड़ने वाली भाषा है।
डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त : राजस्थान के किसी छोटे भाग 'डगल' पर रखा गया नाम।
ठदमराज : स्वतंत्र या तेज चलने वाली भाषा। डग+ल = तेज चाल लिए हुए।
जगदीश सिंह गहलौत : डींग+गल = ऊँची बोली
मोतीलाल मेनारिया : डींग+ल = अतिरंजनापूर्ण भाषा।
डॉ० सुकुमार सेन : डिंगर = गँवारू, निम्न भाषा।
नरोत्तमस्वामी : प्राचीन काल में उडिंगल नामक एक छन्दशास्त्री का उल्लेख मिलता है। जैसे पिंगल (एक प्राचीन छन्दशास्त्री) से 'पिंगल' नाम पड़ा उसी तरह उडिंगल से डिंगल पड़ गया। बाद में उडिंगल का ही डिंगल हो गया।

डॉ० भोलानाथ तिवारी नरोत्तमदास स्वामी के मत से सहमत हैं। डिंगल के प्रसिद्ध कवियों में नरपति नाल्ह, बाँकीदास, ईसरदास, पृथ्वीराज, करणीदान, सूरलदास आदि प्रमुख हैं। डिंगल का सर्वप्रथम प्रयोग इनके बहुप्रसिद्ध कवि बाँकीदास की कृति 'कुकवि बत्तीसी' में मिलता है जो सन् 1814 ई० के आसपास रची गई।

Scanned with CamScanner

21. खड़ीबोली : 'खड़ीबोली' का अर्थ अनेक विद्वानों ने अपने-अपने मतानुसार दिया है। कुछ प्रमुख विद्वानों के मत इस प्रकार हैं :

कामता प्रसाद गुरु	:	कर्कश।
किशोरीदास वाजपेयी	:	'आकारान्तता' की 'खड़ी पाई' ने ही इसे यह नाम दिया।
वेली	:	प्रचलित या चलती।
गिलक्राइस्ट	:	मानक या परिनिष्ठित।
अब्दुल हक़	:	गँवारु।
गार्सां द तासी	:	खरी।
हर्टफोर्ड कोश	:	शुद्ध भाषा [The ~~True~~ True Genuine Language]
प्लेट्स	:	शुद्ध नाम 'खरी' तथा अशुद्ध नाम 'खड़ी'।
बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन	:	'खरी' का पर्यायवाची ही 'खड़ी'।
आगरा गजेटियर	:	गँवारी या खड़ी बोली।
ग्रियर्सन	:	हिन्दुस्तानी
चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	:	मेरठ की पड़ी बोली को खड़ी बनाकर लश्कर और समाज के लिए उपयोगी बनाया।
ब्रजरत्न दास	:	रेखता मिश्रित भाषा को लल्लूलाल आदि ने शुद्ध कर 'प्रेमसागर' लिखा, यही खड़ा करना हुआ। अतः खड़ी = अमिश्रित।
डॉ० धीरेन्द्र वर्मा	:	ब्रज की तुलना में यह खड़ी (कठोर) लगती है।
चन्द्रबली पाण्डेय	:	प्रकृत, ठेठ या शुद्ध बोली।
डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या	:	जो खड़ी हो अर्थात् 'पड़ी' का उलटा। पुरानी ब्रज, अवधी आदि बोलियाँ आधुनिक युग की मानक (Standrad) भाषा नहीं बन सकीं। इसलिए इन्हें 'पड़ी बोलियाँ' कहा गया। 'पड़ी' का उलटा हुआ 'खड़ी' अर्थात् साहित्य में प्रयोग करते समय जब अरबी-फ़ारसी शब्दों को निकालकर इसे शुद्ध रूप में प्रयोग किया गया तो इसे 'खरी बोली' कहा गया जो बाद में 'खड़ी बोली' हो गया।

क्षेत्र : उत्तर प्रदेश, बिहार, दिल्ली, राजस्थान, मध्यप्रदेश, पंजाब (पंजाबी भाषा का क्षेत्र को छोड़कर), बिजनौर, मुरादाबाद, मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, देहरादून का मैदानी भाग।

अन्य नाम : कौरवी।

महत्त्व : राष्ट्र और राज्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित। उत्कृष्ट साहित्य की रचना।

22. मारवाड़ी :

क्षेत्र : अरावली का पश्चिमी-दक्षिणी भाग, मुख्यतः जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर तथा उदयपुर का भाग।

बोलने वालों की संख्या : लगभग 60 लाख।

लिपि : मुड़िया, महाजनी और नागरी।

महत्त्व : साहित्य-रचना। बही-खातों में खूब प्रचलन।

23. जयपुरी :

क्षेत्र : राजस्थान का पूर्वी भाग। जयपुर, कोटा, बूँदी। बोलने वालों की संख्या 60 लाख। इन क्षेत्रों में हड़ौती भी बोली जाती है।

24. मेवाती : अलवर तथा पूर्वी पंजाब के दक्षिणी भाग के गुड़गाँव के निकटवर्ती क्षेत्र में यह बोली जाती है। मेवाती पर ब्रजभाषा का प्रभाव है। अहीरवाटी भी यहाँ बोली जाती है जिसपर बाँगरू और खड़ी बोली का प्रभाव है। इसके बोलने वालों की संख्या लगभग 16 लाख है।

25. मालवी : यह मालवा क्षेत्र की बोली है। इसका क्षेत्र राजस्थान का दक्षिणी भाग है। केन्द्र इन्दौर है। इसके बोलने वालों की संख्या लगभग 45 लाख है। इस बोली में साहित्य-सृजन का हुआ है।

Scanned with CamScanner